दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 04.04.2026

प्रकाशनार्थ

'दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय में पुरातन छात्र सम्मेलन का भव्य आयोजन'

गोरखपुर, 4 अप्रैल। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर में आज पुरातन छात्र सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर देश–प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत पूर्व छात्र–छात्राओं ने सहभागिता कर अपने छात्र जीवन की स्मृतियों को साझा किया तथा महाविद्यालय द्वारा दिए गए संस्कारों और मूल्यों को साझा किया।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर राजवंत राव, पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने अपने सम्बोधन में जीवन मूल्यों, भारतीय ज्ञान परंपरा और कर्मनिष्ठा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर निष्ठा, धैर्य और समर्पण के साथ कार्य करना चाहिए। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि तात्कालिक परिणामों की अपेक्षा किए बिना यदि व्यक्ति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करता है, तो समय के साथ उसे उसके प्रयासों का फल अवश्य प्राप्त होता है। उन्होंने वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान परंपरा की बढ़ती प्रासंगिकता पर भी चर्चा की और कहा कि आज विश्व भारतीय संस्कृति और शिक्षा प्रणाली की ओर आकर्षित हो रहा है। उन्होंने महंत दिग्विजयनाथ महाराज के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने सदैव भारतीय संस्कृति आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया, जिससे विद्यार्थियों में नैतिकता और संस्कारों का विकास होता है। उन्होंने यह भी कहा कि परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं है, बल्कि उसमें आधुनिकता के अनेक तत्व समाहित होते हैं, जिन्हें समझकर अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने योग और सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से समाज को जोड़ने की आवश्यकता पर भी बल दिया।

विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर राजेश मल्ल, हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ने अपने संबोधन में छात्र जीवन की स्मृतियों को भावुकता के साथ साझा किया। उन्होंने कहा कि अपने ही शैक्षणिक परिसर में आयोजित ऐसे कार्यक्रम व्यक्ति को उसके अतीत से जोड़ते हैं और उन सुनहरे पलों को पुनः जीवंत कर देते हैं, जो जीवन की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस महाविद्यालय ने न केवल उन्हें शिक्षा प्रदान की, बल्कि अनुशासन, समर्पण और आपसी स्नेह की अमूल्य शिक्षा भी दी। उन्होंने यह भी कहा कि छात्र जीवन में प्राप्त संस्कार ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का आधार बनते हैं और आगे चलकर उसे सामाजिक व व्यावसायिक जीवन में सफल बनाते हैं।

विशिष्ट अतिथि डॉ. अमरनाथ सहयुक्त आचार्य, बी.आर.डी.पी.जी. कालेज, देवरिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पुरातन छात्र सम्मेलन केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भावनाओं और स्मृतियों का संगम होता है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से पूर्व छात्रों को अपने पुराने परिवेश में लौटने का अवसर मिलता है, जहां उन्होंने अपने जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष बिताए होते हैं। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय में प्राप्त शिक्षा, अनुशासन और संस्कारों ने उनके अध्यापन जीवन को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने यह भी कहा कि एक शिक्षक के रूप में जब वे अपने विद्यार्थियों को शिक्षित करते हैं, तो उसमें इस संस्थान से प्राप्त मूल्यों की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्रीकृष्ण सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में जीवन में अनुशासन और निरंतर परिश्रम के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि व्यक्ति के जीवन में परिस्थितियां, सामाजिक व्यवस्थाएं और राजनीतिक परिवेश समय–समय पर बदलते रहते हैं, लेकिन उसके कर्म और संस्कार स्थायी होते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यदि व्यक्ति अपने मूल्यों और सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्ध रहता है, तो वह हर परिस्थिति में सफलता प्राप्त कर सकता है। उन्होंने युवाओं को संदेश दिया कि वे अपने जीवन में अनुशासन को सर्वोपरि रखें और निरंतर परिश्रम के माध्यम से अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करें। इस अवसर पर विशेष रूप से उन विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। जो यू.जी.सी. नेट के साथ सरकारी सेवा में इस वर्ष चयनित हुए।

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

कार्यक्रम के अंत में **महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने आभार ज्ञापन** प्रस्तुत करते हुए सभी अतिथियों, पुरातन छात्र–छात्राओं एवं उपस्थित जनों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन न केवल संस्थान की गौरवशाली परंपराओं को सुदृढ़ करते हैं, बल्कि वर्तमान और पूर्व छात्रों के बीच एक सशक्त सेतु का निर्माण भी करते हैं। उन्होंने मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के प्रेरणादायी उद्‌बोधनों के लिए विशेष धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि उनके विचार निश्चित रूप से विद्यार्थियों के जीवन को नई दिशा प्रदान करेंगे। साथ ही उन्होंने पुरातन छात्रों के उत्साहपूर्ण सहभागिता की सराहना करते हुए उन्हें महाविद्यालय के विकास में निरंतर सहयोग देने का आग्रह किया। उन्होंने यह भी कहा कि महाविद्यालय सदैव अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है और भविष्य में भी ऐसे आयोजन होते रहेंगे, जिससे संस्थान की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक परंपराएं और अधिक समृद्ध हों। इकार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. त्रिभुवन मिश्रा ने कुशलतापूर्वक किया।

उक्त अवसर पर महाविद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक प्रो. परीक्षित सिंह, प्रो. नित्यानन्द श्रीवास्तव, प्रो.शुभ्री श्रीवास्तव, डॉ. प्रतिमा सिंह, डॉ. इन्द्रेश पाण्डेय, डॉ. राम प्रसाद यादव, डॉ. सुनील सिंह, डॉ. प्रवीन सिंह, अमित सिंह, अभय सिंह, शुभम मिश्रा सहित शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी एवं 59 पुरातन छात्र उपस्थित रहे।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क